B.A. PART – 1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) प्रथम-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न :- रासो का अर्थ बताएँ ?

उत्तर :- 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति विवादास्पद है। इस शब्द की व्युत्पत्ति समय-समय पर संस्कृत के रहस्य, रसायण, राजादेश, राजसूय, रास और रासक शब्दों से मानी गई। हिन्दी-शब्द-सागर में रहस्य से रासो की व्युत्पत्ति मानी गई है, लेकिन पर्याप्त खोजों के आधार पर यह सिद्ध हो चुका है कि रहस्य का प्राकृत रूप रहस तो मिलता है पर रासो नहीं। इसलिए रहस्य से रासो का सम्बन्ध जोड़ना सर्वथा असंगत है।

गार्सा-द-तासी ने 'रासो' का सम्बन्ध राजसूय यज्ञ से माना है। उनका मत है कि सभी चारण काव्यों में राजसूय-यज्ञ का वर्णन है, इसलिए इन काव्यों का नाम 'रासो' पड़ा होगा। लेकिन यह मत संगत प्रतीत नहीं होता, क्योंकि 'बीसलदेव रासो' और 'संदेशरासक' में राजसूय-यज्ञ का उल्लेख नहीं है। नरोत्तम स्वामी ने इस शब्द की उत्पत्ति 'रसिक' से मानी है, प्राचीन राजस्थानी भाषा में यह शब्द इस प्रकार है- रसिक, रासउ, रासो, परन्तु यह मत भी युक्तियुक्त नहीं। चारण-काव्यों में तो इसकी आंशिक सत्यता सिद्ध हो सकती है, लेकिन अपभ्रंश काव्यों के लिए यह नाम कैसे उचित हो सकता है? इसलिए भी नरोत्तम स्वामी का मत भी उचित प्रतीत नहीं होता।

आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय ने 'रासो' की व्युत्पत्ति रासक (संस्कृत) से मानी है जिसका अभिप्राय रूपक के एक भेद से है। 'पृथ्वीराजरासो' का प्रारम्भिक भाग उदाहरणार्थ है, लेकिन उसमें सर्वत्र नाटकीय पद्धति का निर्वाह नहीं। आचार्य शुक्ल ने 'रासो' का सम्बन्ध रसायन से माना है, इसके लिए उन्होंने 'बीसलदेव रासो' की उस पंक्ति का प्रमाण दिया है जिसमें रसायन से अभिप्राय काव्य से लिया गया है।

पंक्ति इस प्रकार है—

"नाल्ह रसायन आरम्भई शारदा तूठी ब्रह्मकुमारि।"

कुछ विद्वानों ने 'रसिया' से रासो लिया है जिसका अभिप्राय मद्दा शृंगार है, लेकिन रासो काव्यों में कहीं भी ऐसा शृंगार-वर्णन नहीं जिसे मद्दा शृंगार कहा जा सके, लेकिन इसकी पुष्टि के लिए कोई वैज्ञानिक आधार नहीं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'रासक' को छन्द-विशेष तथा काव्यभेद माना है। रासो-काव्य के मूलरूप में रासछन्द प्रधान रहे होंगे। आगे चलकर रास-काव्य का ऐसा रूप निश्चित हो गया जिसमें किसी भी गेय छन्द का प्रयोग किया जा सकता था। भाव की दृष्टि से रासो काव्य प्रेम-प्रधान था। बाद में इस काव्यरूप में कोमल भावों के अतिरिक्त अन्य विचारों को भी प्रश्रय मिला। जिस प्रकार अँग्रेजी का सॉनेट आरम्भ में प्रेमभावों का काव्य था, परन्तु बाद में उनमें अन्य भावों की अभिव्यक्ति की गई, यही दशा अपभ्रंश और हिन्दी के रासो काव्यों की समझनी चाहिए।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न :- रासो का अर्थ बतायें?

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.)
मोब०- 7909046087
दिनांक - 02.02.2022